श्री शंकराचार्य जी का

ब्रह्मं क्या है ?

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

श्री शंकराचार्य जी का

ब्रह्मं क्या है ?

लेखक : श्री ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वराव

For Books Please Contact :

TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO

Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.

W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.50/-

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-

2) ज्ञान माला Rs.70/-

3) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।................. Rs.70/-

4) अगर मानव को योगी बनना है तो ?........... Rs.60/-

5) महात्माओं का संदेशों............................... Rs.50/-

6) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-

7) शाकाहार ही मानव का आहार है !............... Rs.50/-

To subscribe to Tatavarthy's YouTube channel:

When you click the YouTube link sent in the WhatsApp group, it will open the Tatavarthy Veera Raghava Rao channel. Once open, you will see the "Subscribe" button-click on it to subscribe. By clicking the bell icon next to it, you can receive notifications of new videos everyday.

Otherwise, visit www.tst.org.in/videos/ Click on "Tatavarthy Veera Raghava Rao" in Section I, or on the names in sections II & III. This will open the respective channels. Once open, click the "Subscribe" button, and by pressing the bell icon next to it, you can get daily video updates.

श्री शंकराचार्य जी का

ब्रह्मं क्या है ?

श्री शंकराचार्य जी ने ब्रह्मं के बारे में और इसके महत्व के बारे में बहुत सारे विषयों बताए हैं।

सहज है कि इस संसार में बहुत कुछ विषयों को महान मानते हैं। लेकिन इतना महान सृष्टि करने वाला सृष्टि करता और कितना ज्यादा महान होंगे। सोचिए! न केवल सृष्टि किया है लेकिन उसको चलाना भी वही है। मतलब जब वह रहेंगे तभी यह सृष्टि रहेगी और नहीं तो सृष्टि भी नहीं रहेगी।

वह हर चीज़ में, हर जगह व्यापक है। सब के अंदर आत्मा के रूप में स्थित है। उन्हीं को सृष्टि करता, अल्लाह, पिताश्री, भगवान, करके बहुत नाम से पुकारते हैं।

उतना महान उस ब्रह्मं के बारे में श्री शंकराचार्य जी ने बहुत गहराई से और अधिक वर्णन किया है। जब इसको समझेंगे तब हम भी उसझ्र ब्रह्मं पर आसक्ती दिखाएंगे, मतलब आत्मा पर आसक्ती दिखाएंगे। जब आसक्ति बढ़ती है, तभी इस ध्यान को आसक्ति से करेंगे, बड़ा श्रद्धा रखेंगे। एक प्रकार से अपना जीवन को धन्य करते हैं, मतलब अपना जीवन में जो प्राप्त करना है वह पाते हैं। जब तक उस ब्रह्मं को साक्षात्कार नहीं करते हैं, हमें मोक्ष नहीं मिलेंगे। यह बात सबको समझना चाहिए।

इसीलिए श्री शंकराचार्य जी ने उस ब्रह्मं का महत्व और लक्षणों के बारे में विवरण दिया है। अभी उन्हें जानते हैं।

''जो दिख रहा है, सुन रहे हो, सब कुछ ब्रह्मं से अलग नहीं है। जब आत्मज्ञान प्राप्त होता है, तब पूरी दुनिया सच्चिदानंद स्वरूप अद्वैत ब्रह्मं जैसे दिखेगा।''

यहां पर इन आंखों से बहुत कुछ लोकों और सारे विषयों को देखते हैं। बहुत कुछ लोकों जो हमारे आंखों से दिख रहे हैं, जैसे सूर्य लोक, चंद्रमा, सितारे, नवग्रहों को। इसी तरह आंखों को नहीं दिखने वाले लोकों के बारे में

भी जान रहे हैं।

यह सभी ब्रह्मं से अलग नहीं है। सब कुछ वही है, को समझना चाहिए। जो भी आप देख रहे हो वह ब्रह्मं ही है। उसी ने सृष्टि किया है।

उनसे, मतलब उन्हीं के विभाग हैं, और कहीं से नहीं निकला है। एक मकड़ी अपने अंदर से ही जाला को निकालती है, कहीं दूसरी जगह से नहीं निकाली है। अपने अंदर से ही निकला हुआ चीज से ही बनती है। इसी प्रकार ब्रह्मं, मतलब आत्मा, से निकला सारे सृष्टि, सारे लोकों, सारे जीवों का उत्पन्न हुए हैं। यह सभी ब्रह्मं से अलग नहीं है। इसीलिए बड़ों ने कहा है कि, सब कुछ भगवान है, वह हर जगह व्यापक है, ऐसी कोई जगह नहीं है जहां वह नहीं है।

हम जो महान समझते हैं, सुनते हैं, जो कुछ भी है, सभी ब्रह्मं ही है। ब्रह्मं के बारे में, और ज्यादा जानने के लिए ही, मानव लोग अध्ययन कर रहे हैं। श्री शंकराचार्य जी ने कहा है आप जिसके बारे में सुन रहे हैं, वह सब कुछ ब्रह्मं ही है। उनसे अलग कुछ भी नहीं है। जब आत्मज्ञान प्राप्त करते हैं, तब पूरी दुनिया आपको सच्चिदानंद स्वरूप अद्वैत ब्रह्मं ही दिखेगा।

यह बात सामान्य लोगों को समझ नहीं आएगा। वह अलग है, यह अलग है, वह आदमी अलग है, यह आदमी अलग है, वह जानवर अलग है, यह जानवर अलग है, के भाव में रहते हैं। अलग-अलग भावों के वजह से ही यह सभी द्वेष, जलन, झगड़ा होते रहते हैं। जब भी आप आत्मा ज्ञान प्राप्त करते हैं, तब मालूम होगा कि सब कुछ वह सच्चिदानंद स्वरूप ही है। सत, चित्त, आनंद मतलब सत्यमय, चैतन्यमय, और आनंदमय अद्वैत ब्रह्मं, मतलब ब्रह्मं से कुछ अलग नहीं है, को जानेंगे।

जब तक इस स्थिति पहुंचेंगे, तब तक आपको जन्मे लेना ही पढ़ते हैं। इसीलिए अगर जन्म रहित स्थिति पाने के लिए, आपको ब्रह्मं के बारे में, और ब्रह्मं का महत्व, को जानना ही चाहिए। इसलिए जब तक ज्ञान पाते हैं, तब तक सब कुछ अलग-अलग ही दिखेगा। जब ज्ञान पाते हैं, तब सब कुछ एक ही है का विषय समझते हैं। श्री शंकराचार्य जी ने और क्या कहा है?

"ब्रह्मं को अपने सामान्य लक्षण ऑन में नहीं दिखेगा। उसके लिए कुछ अलग लक्षण होना है। बिना ब्रह्मं, इस संसार में कुछ भी नहीं है। अगर इस ब्रह्मं से अलग आपको कुछ दिखा इसका मतलब वह मृगजल जैसे ही है। वह असत्य ही है।" श्री शंकर शंकराचार्य जी ने कहा है।

हमें इसके बारे में क्यों जानना चाहिए? ज्ञान बढ़ाने के लिए, ज्ञानी बनने के लिए, दुख से बाहर निकालने के लिए ही। अगर आपका भाव अलग-अलग दिखता है, मतलब आप को दुख ही रहेगा। इसीलिए पत्री जी ने कहा है कि, "**अगर आपके अंदर हल्का सा भी दुख है, मतलब आप अज्ञानता में ही है**" । अलग-अलग मानकर आप जो कुछ करेगा उससे दुख ही पाएगा।

इसलिए उसने कहा है कि इस ब्रह्मं को दुनिया में, जो सामान्य लक्षणों से देख नहीं सकते हैं, और वह अलग तरीके से दिखेंगे। मतलब जब सब कुछ वही है, तब उनको किस से तुलना करेंगे। आपका साधारण ज्ञान से कैसे ब्रह्मं को जानेंगे?

इसलिए उस ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए। इसलिए ब्रह्मं के अलग-अलग इस दुनिया में कुछ भी नहीं है। अगर लगता है अलग वह मृगजल जैसा ही असत्य है। तब अगर आपको ब्रह्मं के अलावा आप देख सकेंगे। तब सोचना पड़ेगा।

आप ब्रह्मं के अलावा कुछ आविष्कार करो! पूरी दुनिया घूमो, जाओ समुद्र में देखो, आकाश में, भूमि पर, चंद्रमा पर, सूर्य भगवान में, पूरा घूमो। अगर आपको ब्रह्मं के अलावा कुछ भी दिखेगा, वह मृगजल ही है।

जब आप दूर से मृगजल को देखते हैं, पानी दिखता है लेकिन पास जाकर देखेंगे तो वहां पानी नहीं रहता है। मतलब पानी था, समझते हैं जबकि असलियत में वहां नहीं है। यह भी ऐसा ही है। श्री शंकराचार्य जी ने कहा है

कि, ब्रह्मं से अलग सा अगर कुछ भी दिखा है, मतलब वह मृगजल जैसे ही है।

अगर आपको यह बात समझ आ गया और उस तरह प्रवर्तन करेंगे तब आपको और जन्म नहीं रहेंगे। लेकिन बस ऐसे ही बोल रहे हैं, पढ़ रहे हैं, जान रहे हैं लेकिन आचरण में नहीं ला पा रहे हैं, तब कोई फायदा नहीं होगा।

एक बार जब श्री शंकराचार्य जी गंगा स्नान करके वापस लौट रहे थे, तब बीच रास्ते में एक चंडाल सामने आया था। उनके शिष्य लोग उस चंडाल को बाजू हटने को कह रहे थे और श्री शंकराचार्य जी भी कहा था। तब उस चंडाल ने पूछा, किसको हटाने को कह रहे हैं ? इस शरीर को या किसी और चीज को ? और पूछा आप किस में महान हो ?

जिस पांच भूतों से इस शरीर बना है आपका भी उसी से बना है। जो आत्मा इस शरीर में है, वही आपके भीतर में भी है। आप किस में महान हो ? कैसे महान हो ? जब यह पूछने से श्री शंकराचार्य जी को समझ आ गया था, कि यह सामान्य आदमी नहीं है। अभी तक मैं और वह अलग समझता था, और अब समझ आया कि वह भी परम ब्रह्म स्वरूप है, और वह मुझसे किसी चीज में कम नहीं है। यह विषय समझकर चंडाल के पैर पड़ गए थे।

अभी आप लोगों का साधना का स्थाई वहां तक पहुंचना है। अगर आप में या अरिशड वर्गों, या यह लक्षणों, या गुणों अगर आप में अभी है, मतलब यह आदमी उनसे महान है, वह आदमी इससे महान है, अगर इन लोगों को विमर्श कर रहे हैं, अगर वह ऐसे लोग हैं का निर्णय ले रहे हैं, मतलब आपको अभी ब्रह्मं का ज्ञान अभी उस स्थाई तक नहीं पहुंचा है। इसलिए उस स्थाई तक आपको बढ़ना चाहिए।

ब्रह्मं से अलग और इस संसार में कुछ भी नहीं है। सब एक ही है। जो भी मैं हूं, सब कुछ वही है का स्थाई तक पहुंचना चाहिए। आपका ध्यान साधना, प्राप्त किया ज्ञान, उस स्थाई में रहना चाहिए।

पत्री जी वही कहते हैं। अगर वह अलग है, यह अलग है करके

कहते हैं, लड़ते हैं, और असूय रहते हैं मतलब आपको क्या समझ में आया है ? आपके पास कितना ज्ञान है ? कितना मूर्खतापन है ? अगर इस मार्ग में नहीं आया, तब अलग है ! लेकिन पत्री जी के मार्ग में आकर सबको अलग करना, द्वेश दिखाना, असूय होना, लड़ना एक दूसरे से, मतलब आप लोग कितना अज्ञानता में हैं, ? समझिए।

न केवल इस देश में, दुनिया में ही नहीं, सृष्टि में जहां भी जाओ, और कुछ भी सीखो, जानो की समस्त वही है। कई प्रकार के रूपों है, लेकिन सब वही है। जैसे गहने अलग है, लेकिन सोना एक ही है। वही हमें जानना है। जब उनका महत्व के बारे में जानेंगे, तब हमारा प्रवर्तन में कितना बदलाव आएगा ।

॥ 2 ॥

''जैसे गरम लोहा में अग्नि लाल रंग के होता है ...... खुद कितना प्रकाशनीय लगता है, ब्रह्मं भी बाहर से और अंदर व्यापक हुए समस्त प्रपंच को खुद प्रकाश देते हुए व्यापित है'' ।

देखिए, जैसे लोहे के गोले कई प्रकार के आकारों में बदलने से पहले लोहे को लाल होने तक जलाना है। तब उसको छड़ी और पत्रका और कई प्रकार के आकारों में बदलते हैं। जलाने के बाद ही वह लंबाई, चौड़ा बनेगी। लेकिन जब ऐसे लाल रंग तक का गरम हुआ लोहा को देखेंगे तो अंदर से बहुत प्रकाशित होता है।

जब लोहा ठंडा है वह काला दिखता है, प्रकाश नहीं रहता है। लेकिन जब गरम करते हैं, प्रकाशित होता है। इसी तरह ब्रह्मं न केवल बाहर के विषयों में, अंदर के विषयों से भी प्रकाशित करते हुए......व्यापित होते हैं, कह रहे हैं।

मतलब न केवल बाहर दिखने वाले, और नहीं दिखने वाले के प्रकाश भी उन्हीं का है, कह रहे हैं। जैसे सूर्य भगवान नहीं आते हैं तब पूरा अंधकार है, लेकिन जैसे ही सूर्य भगवान निकलता है रोशनी आता है। मतलब इतना प्रकाशनीय है, सूर्य भगवान। यहां पर आपको क्या देखना है ? कि सूर्य भगवान का प्रकाश का कारण भी ब्रह्मं ही है। ब्रह्मं के वजह से ही सूर्य भगवान प्रकाशित हो रहा है।

जब एक ही सूर्य का इतना प्रकाश है सोचिए कि करोड़ों सूर्य को कितना प्रकाश होगा! उतना प्रकाश है ब्रह्मं का। वह करोड़ सूर्याओं का प्रकाशनीय है। उनका वर्णन नहीं कर सकते हैं। इतना प्रकाशनीय है ब्रह्मं, मतलब आत्मा, सबके अंदर स्थित है। उतना ज्यादा प्रकाशनीय है ब्रह्मं। आत्मा हर समय प्रकाशनीय है। इसीलिए उसको ज्योति स्वरूप कहते हैं। आत्मा का प्रकाश घटता नहीं है।

इसीलिए आप देखिए मंदिरों में अखंड ज्योति जलाते हैं। वह हर समय जलते रहना चाहिए, कहते हैं। उसको कभी बुझाता नहीं है। अगर बुझ गया, तब अमंगल कहते हैं। इसका मुख्य कारण है, मंदिर मानव शरीर का प्रतिरूप है। इस शरीर को मंदिर से तुलना करते हैं, जो शरीर के अंदरए ब्रह्मं है, और सबको प्रकाशित करता है। वह ब्रह्मं, मतलब आत्मा, को अखंड ज्योति से तुलना करते हैं।

मंदिरों में इसीलिए ज्योति जलाते हैं, जब इस आत्मा ज्योति बुझ गया मतलब कहते हैं कि वह मर गया है। इसलिए वह कभी भी बुझाना नहीं चाहिए। इसको बताने के लिए ही मंदिर में अखंड ज्योति रखते हैं। इसी प्रकार इस शरीर में ओंकार की आवाज सुनाई देती है। वही मंदिर में घंटा का आवाज है। इसी प्रकार पांच भूतों का प्रतिरूप है यह शरीर।

हड्डियां, भूमि तत्व का है, अग्नि, देखेंगे तो हर एक शरीर गरम रहता है, शरीर में 75% पानी रहती है। इसी प्रकार वायु हर समय संचार करती है, और इस प्रकार आकाश तत्व का मानस भी इस शरीर में रहता है। मतलब इस शरीर का प्रतिबिंब ही मंदिर है। शरीर के अंदर आत्मा ही उस मंदिर में विग्रह है। यह विषय को नहीं भूलने के लिए मंदिरों का निर्माण किए हैं।

नहीं तो भगवान कौन है ? कहां है ? कैसे मालूम होगा ? जानना भी बहुत मुश्किल है ! इसीलिए इस बुद्धि शक्ति से द्वउस तरह का प्रतिरूप बनाया गया है।

इसीलिए कहते हैं कि,

''देहो देवालयों प्रोक्तः जीवो देवो सनातनः''।

मतलब इस शरीर ही मंदिर है और अंदर ही जो जीव है, वही भगवान है। यह भी कहा गया है। इसलिए इतना महान ब्रह्मं के बारे में सारे विषयों को जानना चाहिए।

॥ 3 ॥

उसने और क्या कहा है कि ?

''जिसके कांति से सूर्य, आदि प्रकाशित कर रहे हैं, जिसको वह सूर्य, आदि प्रकाशित नहीं कर सकते, जिससे पूरा जगत प्रकाशित हो रहा है, जानिए कि वही ब्रह्मं है'' ।

जिस कांति से सूर्य, आदि मतलब सूर्य और बाकी लोकों प्रकाशित कर रहे हैं, अगर वह नहीं है तब सारे प्रकाशहीन हो जाएंगे। मतलब उनके वजह से सूर्य और आदि लोकों प्रकाशित कर रहे हैं। अगर वह नहीं है, उनके उस प्रकाश ही नहीं है, और वह किसी को भी प्रकाशित नहीं कर पाएंगे।

इसी प्रकार उसने कहा है कि सारा जगत भी उस ब्रह्मं के वजह से ही प्रकाशित हो रहा है। अगर उस ब्रह्मं को आराधना करेंगे तब सारे लोकों में रहने वाले समस्त देवताओं को आराधना करना समान है। इसीलिए कहते हैं कि जिसके बारे में जानने के बाद और कुछ जानने की जरूरत नहीं है, वही को जानना चाहिए।

तब किसके बारे में जानना चाहिए ? ब्रह्मं के बारे में जानना चाहिए। ब्रह्मं का मतलब आत्मा है। आत्मा कहां है ? अंदर है। अगर अंदर का आत्मा को जानना है, तब क्या करना है ? अंदर जाना है। अंदर कैसे जाना है ? अंदर जाने का मार्ग ही हमें पत्री जी ने दिया है, ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान मार्ग है।

अभी हमको सत्य का महानता जान चुके हैं। इसलिए जरूर हमें आत्मा को, मतलब सत्य को आश्रय करना है, क्योंकि ब्रह्मं ही सत्य है, और कुछ नहीं रहेगा। अनात्मा सारे अदृश्य हो जाएंगे। सिर्फ ब्रह्मं ही सत्य है और उस सत्य को आश्रय करने वाला से ज्यादा भाग्यशाली कोई नहीं है। इसलिए पत्री जी ने कहा है कि, विग्रहों का आराधना नहीं, केवल सत्य का आराधना ही सही। सत्य से महान कुछ नहीं है। सत्य से ही सब कुछ निकला हुआ है। उस सत्य ही आत्मा है।

आत्मा को आश्रय करने का मार्ग ही ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान है !

यहां पर मानव, मतलब तीन है। शरीर, मानस और आत्मा। अगर इस आत्मा का आश्रय करना है तो, पहले आपको आंखें बंद करना है। तब शरीर के अंदर मानस के साथ रहेंगे। तुरंत आलोचनाएं आते हैं। आलोचनाओं को कट करके तब ''श्वास पर ध्यास'' रखेंगे तो आलोचनायें रुकते हैं। जब मनस काम नहीं कर रहा है, तब आप आत्मा के साथ रहेंगे, मतलब आप आत्मा को आश्रय किया है।

संगीत के साथ या गइडिंग ध्यान में आप आंखें बंद करते हैं। आलोचनाएं आते हैं, संगीत लगाने पर, तब मानस काम करता है। मानस के पास रुक जाते हैं। गाइडिंग में भी मानस के पास रुक जाते हैं। और किसी प्रकार के ध्यान में भी आप मानस के पास रुकते हैं, आत्मा को आश्रय नहीं करते हैं। इसीलिए इतना महान ब्रह्मं को आश्रय करने का मार्ग ही ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान ही है।

जब यह विषय समझेंगे तब सिर्फ और सिर्फ ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान ही करेंगे! एक प्रकार से कह सकते हैं कि, यह सीनियर मास्टर्स को भी इस सत्य पर अवगाहन नहीं है। अगर होता तो वह ऐसे नहीं बात करेंगे और ऐसा नहीं करवाएंगे। वह लोग सिर्फ आंखें बंद करवाते हैं लेकिन मानस को नहीं। जब तक मानस बंद ना हो, तब तक ब्रह्मं का आश्रय नहीं कर सकते हैं।

इसलिए हर एक को जानना चाहिए। सूर्य भगवान और समस्त लोकों भी उस ब्रह्मं से ही प्रकाशित हो रहे हैं। इस सूर्य प्रकाश से ही चंद्रमा प्रकाशित करता है। भूमि अपने आप खुद घूमती है और सूर्य भगवान का भी चक्कर लगाती है। जिस भूमि भाग सूर्य को दिखता है वह दिन है, जो नहीं दिखने वाला भाग, रात अनुभव करती है।

अगर ब्रह्मं ही नहीं है तो सृष्टि ही नहीं है। दुनिया में बहुत कुछ है को समझते हैं, लेकिन सिर्फ वही है, दूसरा कुछ नहीं है। इसलिए सब कुछ उनके वजह से ही सृजन हुई है, प्रकाशित हो रहा है और चल भी रहा है।

॥4 ॥

"जो सूक्ष्म नहीं है, स्थूल नहीं है, छोटी नहीं है, लंबा नहीं है, सृजन नहीं है, जो बदलता नहीं है, रूप नहीं है, गुण नहीं है, वर्ण नहीं है, नाम नहीं है, वही ब्रह्मं है, और उसी को ध्यान करो" ऐसे कहते हैं।

यहां पर सृष्टि का मूल, सृष्टि का आधार, सृष्टि को चलाने वाले, उस ब्रह्मं को ध्यान करने को कहा है। इस ब्रह्मं का लक्षणों वर्णन किया है। इस ब्रह्मं सूक्ष्म नहीं है, इतना सा सृष्टि सूक्ष्म कैसे हो सकती है ? स्थूल है क्या ? स्थूल भी नहीं है। फिर भी एक शरीर का कण से भी छोटा सा, जो नहीं दिखता है, इतना सूक्ष्म रूप में हर शरीर में रहती है।

ना छोटी सी ----- वह छोटी नहीं होगी।

ना लंबी सी ----- वह लंबी भी नहीं होती।

जिसका पैदाइश नहीं है --- वह किसी को भी पैदा नहीं होती है, क्यों ? उनको पैदाइश ही नहीं होती।

जिसका कोई बदलाव नहीं है ---- किसी तरह का बदलाव नहीं होता है। बचपन में एक जैसा, युवा अवस्था में अलग, बुढ़ापे में अलग सा, नहीं होती है। उस ब्रह्मं को बदलाव ही नहीं होती है। आदि में, मध्यस्थ में, और अंत में भी, ऐसा ही रहता है। मतलब सृष्टि से पहले, सृष्टि के बाद, और सृष्टि के अंत में भी बदलाव नहीं होती है। इस विषय भागवत गीता में अध्याय 10 और श्लोक 20 में श्री कृष्ण जी अर्जुन को बताते हैं।

श्लोकः अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥ (भ.गी.10 - 20)

तात्पर्य: हे अर्जुन, मैं आत्मा हूं, समस्त भूतों में स्थित हूं। मैं इस सृष्टि से पहले भी था, सृष्टि चलाते वक्त भी हूं, और सृष्टि का अंत के समय में भी रहूंगा। इसलिए कोई भी बदलाव नहीं है। बाल्यावस्था, युवावस्था, कौमार्य अवस्था या बुढ़ापे के अवस्था, जैसे कुछ नहीं है।

जिसका रूप नहीं है --- किसी तरह का रूप नहीं है। ऐसा कोई रूप करके निर्णय लेने के लिए, उनका कुछ भी स्वरूप नहीं है। उनको किसी से तुलना नहीं कर सकते हैं। इसलिए उनके बारे में वर्णन करना बहुत कठिन है, बड़ों कहते हैं।

मानव के इंद्रियों से जानना असंभव है। दुनिया में सब लोग इन इंद्रियों से जानने को कोशिश करते हैं, इन आंखों से देखना चाहते हैं। असलियत में इन मानव इंद्रियों को उस शक्ति नहीं है। ज्ञानेंद्रिय को नहीं है, और कर्मेंद्रियों को भी नहीं है। अंतर इंद्रीय मानस को भी नहीं है।

आंखों को नहीं दिखती है, स्पर्श भी नहीं कर सकते हैं, क्यों ? वह मिलता नहीं है। कुछ सुनाई भी नहीं होती है, कम से कम मनस जानने को भी नहीं होता है।

इसलिए कहते हैं कि उस परम ब्रह्म को जानने के लिए इंद्रियातीत स्थिति पहुंचना है। इंद्रियों से परम ब्रह्म को जानना असंभव है। तब इंद्रियातीत स्थिति कैसे पहुंचेंगे ? इसी मार्ग हमें पत्री जी ने दिया है। वही ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान है।

सबसे पहले ध्यान में बैठकर अपने कर्मेंद्रियां को और ज्ञानेंद्रियों को बंद करते हैं। मतलब हाथ पैरों को दोनों को क्रॉस करते हैं, आंखें और मुंह बंद करते हैं, ''श्वास पर ध्यास'' रखकर अंतरेंद्रीय मानस को भी बंद करते हैं। जब मनस काम नहीं करता है, तब हम वहां आत्मा के स्थिति में रहेंगे। तभी आत्मा या ब्रह्मं अनुभूति में आएगा।

ऐसे कुछ दिनों, वर्षों तक जब रहेंगे तब कोई भी आत्मा को अनुभूति पाएंगे। जरूर ! उसमें कोई शक नहीं है। लेकिन यह गाइडिंग, संगीत लगाकर आंखें बंद करते हैं और कोई मास्टर कुछ बातें बताता रहता है, नहीं तो संगीत चलाता है, तब उन लोगों का मानस उसको सुनता रहता है। मतलब यहां अंतर इंद्रिय मानस काम करता रहता है। तब ब्रह्मं को जानना असंभव है। इसलिए सिर्फ और सिर्फ ''श्वास पर ध्यास'' ही सबसे महान, बताने का

कारण यही है।

वह अतींद्रीय है, इंद्रियों को मिलेगा नहीं। केवल अतीन्द्रिय स्थिति में उनका दर्शन कर सकते हैं। जब भी हम इंद्रियों को बांधकर, साधना तीव्रता से करेंगे, जब इन दोनों आंखें काम नहीं करेंगे, तभी अपना तीसरा आंख खुल जाता है। इसके द्वारा ब्रह्मं को जान सकते हैं । सिर्फ उसी को वह शक्ति है।

इसलिए आप देखिए। भागवत गीता में विश्व रूप संदर्शन योग में, अर्जुन को श्री कृष्णा अपना असली रूप दिखाते हैं। जो अभी इस रूप को देख रहे हो, मैं वह नहीं हूं करके असली विश्व रूप दिखाता है। तब अर्जुन उस तेजस और कांति को देख नहीं पाया और ऐसे लगा की आंखें चली गई है।

करोडों मील दूर का सूर्य प्रकाश को हम लोग देख नहीं पा रहे हैं। तब उस ब्रह्मं जो करोड़ों सूर्य सामान प्रकाशित है, तब उसको कैसे देखेंगे ? इसलिए अर्जुन ने कहा, ... कृष्णा मेरे से नहीं हो रहा है, मैं देख नहीं पा रहा हूं। तब अर्जुन को दिव्य नेत्र दिया गया है। तब उस दिव्य नेत्र से वह देख पाया। इसलिए उस चर्म चक्षु या मनो चक्षु से उस ब्रह्मं को देख नहीं पाएंगे का विषय जानना चाहिए।

जिसका वर्ण नहीं है --- काला या सफेद कुछ भी नहीं है।

जिसका नाम नहीं है ---- ब्रह्मं को कोई एक नाम नहीं है। इसलिए सब अपने इच्छा अनुसार कोई भी नाम से पुकारते हैं। हिंदुओं उन्हें परब्रह्म कहते हैं, मुसलमान अल्लाह कहते हैं, ईसाई लोग पिताश्री कहते हैं। ऐसे हर एक अपना एक-एक नाम से पुकारते हैं। उन नाम का अंतर रहने से उनका भगवान अलग है, मेरा अलग है समझते हैं। नाम यह लोगों ने रखा है, लेकिन उनका खुद कुछ नाम ही नहीं है।

जिसका गुण नहीं है --- तमोगुण, या रजोगुण, या सात्विक गुण, सभी मानव को होते हैं। लेकिन उनको नहीं होते हैं।

तब ऐसे ब्रह्मं को, इतना महान को, ध्यान करने को कहा है, श्री

शंकराचार्य जी ने। ध्यान करना मतलब ध्यास रखना। जिस पर ध्यास रखा हो उस ध्यास में है। अगर संगीत लगाते हो तब संगीत पर ध्यास, बातों पर ध्यास रखते हो तब बातों पर ध्यास, मंत्र जाप करते हो, मतलब जप ध्यास, अगर नाम पर है तो नाम पर ध्यास।

अगर ऐसी चीजों पर ध्यास रखेंगे तो ब्रह्मं को कैसे पाएंगे? इसलिए श्री शंकराचार्य जी ने स्पष्ट से कहा है, ऐसा जो कुछ है, वही ब्रह्मं है। और उसी के ऊपर ध्यान करो। सच में श्री शंकराचार्य जी का हर एक बात, जो ब्रह्मं के बारे में बताया है, हर एक विषय को गहराई से अगर समझ सकते हैं, तब "श्वास पर ध्यास" ध्यान के अलावा हम कुछ नहीं करेंगे।

ध्यान का मतलब साक्षात भगवान के ऊपर ध्यास रखना। हम सभी लोग वही काम कर रहे हैं। लेकिन हमारे समिति में बड़े-बड़े मास्टर्स ही संगीत पर ध्यास लगाते हैं और उनका समर्थन कर रहे हैं। कहते हैं कि पत्री जी ने करवाया था। ऐसे कुछ भी बताकर ब्रह्मं के ऊपर ध्यास नहीं लगा कर और बाकी सब कुछ कर रहे हैं।

जिसको पैसे चाहिए, वह मनी मेडिटेशन करते हैं। जिनको रोगों को ठीक करने के लिए संकल्प ध्यान करवाते हैं। ऐसे जिसको जो चाहिए उस प्रकार के कर रहे हैं। लेकिन श्री शंकराचार्य जी ने उस ब्रह्मं का लक्षणों बताकर, उसी पर ध्यान करने को कहा है।

वह कोई सूक्ष्म नहीं है, स्थूल नहीं है, छोटी नहीं है, लंबी नहीं है, जिसका पैदाइश नहीं है, बदलाव नहीं है, रूप नहीं है, गुण नहीं है, वर्ण नहीं है, नाम नहीं है। हम उन्हें पहचानने का और जानने का कितने सारे गुण बताए हैं, देखिए!

असलियत में बहुत लोगों को ब्रह्मं के बारे में आसक्ति ही नहीं होती है। कोई भौतिक लाभों के बारे में कहेंगे तो, उनमें बहुत आसक्ति दिखाते हैं। इसलिए जो हर समय ब्रह्मं के दृष्टि में रहने वाले, सिर्फ ब्रह्मं ही पाएंगे। कई प्रकार दृष्टि में रहने वालों को कई प्रकार को पाते हैं।

इसलिए योग वशिष्ठ में, या भागवत गीता में, जो महत्व विषय है उसको जानकार इस पर ध्यान करने को कहते हैं। इस सृष्टि में सबसे महत्व क्या है ? सिर्फ और सिर्फ ब्रह्मं है ! इसके अलावा कुछ नहीं है। हम सब लोग ''श्वास पर ध्यास'' रखकर उस ब्रह्मं पर ही ध्यास रख रहे हैं।

श्लोकः अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥ (भ.गी.7-23)

तात्पर्यः इस अल्प ज्ञान रहने वाले लोग पाने वाला फल भी तत्कालीन होगा। जो देवताओं को आराधना करते हैं, उन देवलोकों को जाते हैं। मेरे भक्तों मुझे पहुंचेंगे।

योग वशिष्ठ में:

श्लोकः देवांदे वरुचोयांति यक्षा यक्षा श्रवजंतिहि।
ब्रह्म ब्रह्मयजो यंति यदमस्यं तदाप्रयेत ।।

तात्पर्यः देवताओं को ध्यान करने वाले देवताओं प्राप्त करते हैं। यक्षों को ध्यान करने वाले यक्षों प्राप्त करते हैं। इसी तरह ब्रह्मं को ध्यान करने वाले ब्रह्मं को पाते हैं। इसलिए जो सबसे महत्व है, उसी को पाने का प्रयत्न करना चाहिए।

इसलिए ब्रह्मं से बड़ा महत्व कुछ नहीं है। इसलिए ब्रह्मं को पाने का प्रयत्न करना चाहिए। उस मार्ग ही हमें पत्री जी ने दिया है, ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान।

इसलिए ''श्वास पर ध्यास'' रखकर ध्यान करना चाहिए। ब्रह्मं को प्राप्त कीजिए।

॥ 5 ॥

''जैसे दूध में मक्खन व्यापित है, (मतलब दूध में मक्खन मिला हुआ है), इसी तरह ब्रह्मं भी सर्वव्यापित है। इसलिए समस्त वस्तुओं उस परम ब्रह्म से ही व्यापित है। उस परम ब्रह्म से ही सब काम हो रहा है''।

श्री शंकराचार्य जी ने ब्रह्मं कहां है का विवरण क्या दिया है ? कि जैसे दूध में मक्खन सर्वव्यापित है, जब एक पूरा पात्र में दूध लेते हैं, उसमें मक्खन बाहर दिखाई नहीं देता है। लेकिन जब उनका मंथन करते हैं, तब मक्खन बाहर निकलती है। मतलब जबकि दूध में मक्खन नहीं दिखती है, दूध में पूरा व्यापित है। थोड़ा मंथन से बाहर निकलती है।

उस दूध में वह मक्खन कहां है ? एक तरफ, या ऊपर, या नीचे नहीं, हर जगह व्यापित है। दूध में हर जगह रहता है। इसी प्रकार ब्रह्मं मतलब भगवान इस सृष्टि में हर जगह व्यापित है। कहां नहीं है ? किस विभाग में नहीं है ? अच्छे जगह में है ? नहीं अच्छे जगह में भी है ? वह हर जगह है।

यही बात समझाने के लिए, एक गुरु ने अपने शिष्यों को परीक्षा करने के लिए, चार शिष्यों को बुलाकर हर एक को एक-एक केला देकर कहा कि, इनका कोई देखे बिना खाना चाहिए।

ठीक है करके चारो शिष्यों निकल पड़े। एक ने अंधेरा सा एक गुफा में गया था। उनको लगा कि वहां कोई नहीं है और केला खा लिया। एक और ने बाहर कोई नहीं देख रहा है करके खा लिया। एक और ने घर में जाकर सारे दरवाजे बंद कर कर कोई नहीं देखा समझ कर खा लिया है। लेकिन चौथा लड़का, शिष्य ने बिना खाकर केला वापस लाया है।

अगला दिन गुरु जी ने पूछा आप लोग केला खा लिया है ना ? तब एक-एक ने कैसे, कहां खाया बताया था। लेकिन एक तो नहीं खाया था। तब गुरु जी पूछा, तो उसने कहा है कि गुरुजी आपने कहा कि भगवान सर्वव्यापी और हर जगह रहता है। जब वह नहीं रहने वाला प्रदेश नहीं है, तब मैं कैसे खाऊं ? इसलिए मैंने नहीं खाया था।

तब गुरु जी ने उस शिष्य को बधाई दिया, यह कहते हुए कि तुमने मेरे बताया हुआ विषय को अच्छी तरह समझाया है।

सच्ची भक्त कौन है ? जो भी भगवान का अनुभूति पाने वाला ही सही भक्त है। जब आप देखते हैं तो, जो भी मंदिरों में जाते हैं वह बहुत पवित्र रहते हैं। उनका भाषा या बातें , या कर्मों अलग सा रहता है। जब बाहर निकल जाते हैं, वही पवित्रता नहीं दिखता है। वह चिल्लाते हैं, गालियां देते हैं, और आदि करते हैं। इसका मतलब भगवान सिर्फ एक मंदिर में ही रहता है। भगवान तो सर्वव्यापी है। वह कहां नहीं रहे ?

जब वह हर जगह है, तब हर जगह पवित्र होना चाहिए। नहीं तो आप भगवान को क्या समझे ?

इसी प्रकार हम विग्रह के पास जाकर अपना इच्छा को बताते हैं। मतलब भगवान सिर्फ उस विग्रह में है क्या ? और कहीं नहीं है क्या ? सोचिए वह कहां नहीं है ! अगर यह विषय समझ आता है, तब आप कहीं से भी इच्छा बता सकते हैं, करके समझ सकते हैं।

इसलिए जिसको भी भगवान इष्ट है, तब उन लोगों को पहले भगवान के बारे में जानना चाहिए। बिना जानते हुए आप जितना भी आराधना करें उससे क्या फायदा ? अगर भगवान को समझा नहीं, तभी इनके सारे काम विचित्र लगते हैं।

इसलिए श्री शंकराचार्य जी ने स्पष्ट किया है, जैसे दूध में मक्खन सर्वव्यापी है, वैसे ही ब्रह्मं हर जगह व्यापी है। भगवान सर्वव्यापी, हर एक अणु में है।

लोग पूछते हैं कि अगर भगवान हर जगह है, तब मैंने उसे पर्वत को देखा वहां दिखाई नहीं दिया। उस पेड़ में नहीं दिखाया है। जब आप देखते हैं कि जैसे दूध में मक्खन है, लेकिन उनका मंथन करके ही मक्खन निकलता है, वैसे ही अपने शरीर में भगवान को दर्शन करने के लिए साक्षात्कार करना चाहिए। जैसे दूध को मंथन किया हो, ''श्वास पर ध्यास'' रखकर तीव्रता से ध्यान करना है। तभी वह आपको दर्शन देता है।

जैसे हम थोड़ा कृषि करके ही दूध से मक्खन निकाल सकते हैं, वैसे ही साधना भी तीव्रता से कर कर थोड़ा कष्ट करने से ही भगवान आपको मिलेगा। तभी हम भीमावरम आ रहे हैं। वह किस में नहीं है, सभी में है। सबके अंदर आप नहीं जा सकते हैं। अपने अंदर जाने का रास्ता ही ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान है।

जैसे लकड़ी के अंदर आग रहती है, क्या आपको दिखती है ? नहीं ना ? वह कब दिखेगा ? उसको भी मंथन करने से आग निकलती है। ब्राह्मणों जब यज्ञों या यागों करते हैं, ऐसे ही लकड़ी को मंथन कर कर आग को तैयार करते हैं। जैसे लकड़ी के अंदर आग नहीं दिखता है , दूध के अंदर मक्खन नहीं दिखता है, ध्यान नहीं करने से शरीर के अंदर भगवान को कोई दर्शन नहीं कर पाएगा।

पूछते हैं कहां है ? आप ध्यान करो ! तब मिलेगा। जिनको यह सत्य मालूम नहीं, उनके कर्मों थोड़ा विचित्र लगते हैं और हंसी लगते हैं। जब हम अच्छी तरह देखेंगे तो समझेंगे।

आप देखिए बड़े-बड़े स्पीकर लगाकर तेज आवाजों से गाने सुनाते हैं। किस लिए ? कहते हैं भगवान के लिए। तब सोचो ! जो हर जगह है क्या उनको सुनाई नहीं देगा ? क्यों नहीं ? जो भगवान के बारे में नहीं समझा है, और क्या समझ आएगा की, जब कष्ट होते हैं वह मन्नत मांगते हैं। कष्ट से दूर करने के लिए। ज़रा सोचो ! अगर इस शरीर में व्यापित है, क्या उनको मालूम नहीं होगा ? अलग से क्यों मांगना है ? अगर आप ऐसे बता रहे हैं, मतलब आपको भगवान के बारे में अवगाहन नहीं है।

जो भी है जितना ज्यादा हम भगवान के बारे में जानेंगे, उतना भाग्यवान है। ब्रह्मं के अलावा और कुछ नहीं है। यह विषय जानते ही हम सब लोग ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान कर रहे हैं। इस ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान के अलावा इस शरीर में रहने वाला भगवान को प्राप्त करना नामुमकिन है।

वही काम करने से हम हर दिन आगे बढ़ रहे हैं। आपका बढ़ोत्तरी का कारण आपका श्रद्धा ही है। अगर खुद को देखेंगे तो आप पहले कैसे थे,

अब कैसे हैं ? कितना फर्क है ? कितना ज्ञान प्राप्त किए हैं ? कितना बुद्धि विकसित हुआ है ? आप ही समझेंगे।

अगर आप अभी भी ठीक से बात नहीं कर पा रहे हैं, मतलब आपका अश्रद्धा ही कारण है। गुरु का बोध सुन रहे हैं लेकिन उसको और कई बार मनन करना चाहिए। कुछ करेंगे नहीं तो आपका ज्ञान नहीं बढ़ेगी और उच्च स्थिति नहीं पहुंचेंगे।

मैं इस ध्यान मार्ग में आने से पहले योगासनों करता था। वहां पर गुरुजी एक घंटा योगासनों करवा कर भेज देते थे। अगला दिन भी वही आसनाएं करवाते थे। उन्होंने क्या कहा था, एक ही आसन में अगर आधा घंटा स्थिर बैठ सकते हैं, तभी आपका आसन सिद्धि प्राप्त होता है।

लेकिन ऐसे एक ही आसन में आधा घंटा रहना बहुत कठिन है। 5 मिनट भी नहीं रह पाएंगे। तब मैंने घर पर एक-एक आसन में जितना ज्यादा बैठ सकता था, वह ऐसे प्रयत्न करता था। ऐसे एक दो महीने में एक आसन में ज्यादा देर तक बैठ पाता था।

तब दूसरे लोग नहीं बैठ पाते थे। क्यों ? कारण मेरी श्रद्धा और अभ्यास ही है। जो अभ्यास नहीं करेगा तब आगे नहीं बढ़ेगा। और जो अभ्यास करता है वह हासिल करता है। इसलिए मैं दो ही महीने में गुरु बन गया था। मैंने सबको सीखना शुरू किया था। दूसरे और मुझ में फर्क यही है कि मैं घर पर जाकर ज्यादा अभ्यास किया था।

इसीलिए मैं आप लोगों को क्लास बताने का कहता हूं। आप बताते हैं। दोबारा दो-तीन महीने बाद आपका नंबर फिर आता है। तब कैसे बढ़ेंगे ? सोचिए! अगर दूसरे लोग ज्यादा अच्छा बता रहे हैं, मतलब उनका श्रद्धा, दृढ़निश्चयता, कृषि, हमें नहीं दिखाई देता है।

कुछ लोगों का पूर्व जन्म संस्कार रहते हैं। इसलिए कम समय में उनका फल मिलता है। इसलिए यह बात को समझ कर आप ज्यादा कष्ट करना चाहिए। इतना महान मार्ग में आकर अश्रद्धा नहीं रहना है। जब आपका बुद्धि विकसित करेंगे, तब आपको समझ आएगा कि आप जो कर रहे हैं कितना महान है ? या नहीं।

॥ 6 ॥

''समस्त ब्रह्मादि देवताओं सभी उस अखंड आनंद स्वरूपमय ब्रह्म रस, में स्वल्प आनंद रस अपने-अपने भेदों के हिसाब से, आनंद ले रहे हैं'', कहा है श्री शंकराचार्य जी ने।

अखंड आनंद मतलब अनंत आनंद स्वरूप है। उनका वर्णन करना नामुमकिन है। यहां परमब्रह्म को आनंद स्वरूप कहा था। उनका स्वरूप ही आनंद है ... वह अनंत है। इतना या उतना करके बता नहीं सकते हैं।

ब्राह्मादि देवताओं मतलब ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर ही नहीं, इंद्र, वरुण, यक्षों, किन्नरों, किंपुरुषों, वही नहीं, ऋषियों, महर्षियों, योगियों, सिद्धि लोग, अवधूतों, हमारे जैसे साधकों, करने वाले साधना द्वारा आनंद पा रहे हैं। वह कहते हैं।

जो जितना साधना किया अपने स्थाई के हिसाब से उस आनंद पा रहे हैं। उस आनंद को जितना चाहे ले सकते हैं, लेकिन अपने-अपने स्थाई और साधना के हिसाब से ले सकते हैं। वह घटता नहीं है, पिघलता नहीं है। ऐसे वह आनंद ऐसे आता ही रहता है।

देखिए हम अभी इस ध्यान कर रहे हैं। ध्यान करते वक्त पहले हम आंखें बंद कर रहे हैं। आंखें बंद करते ही आलोचनाएं आते हैं, तब हम उसको कट करते हैं और '' श्वास पर ध्यास'' रख रहे हैं। ऐसे करते-करते आलोचनाएं बंद होते हैं। तब वहां क्या रहता है ? आत्मा, मतलब ब्रह्मं। ब्रह्मं कौन है ? आनंद ही उनका स्वरूप है। मतलब उस स्थिति में आप आनंद स्वरूप के साथ हैं। उस आनंद में है, आनंद का अनुभव पाते हैं।

इस स्थिति में 5 घंटे बैठने वाले 5 घंटे आनंद अनुभव पाते हैं। वैसे ही तीन घंटे, या 2 घंटे आदि , आनंद का अनुभव पाते हैं।

उतना आनंद अनुभव पाया है या नहीं कैसे मालूम पड़ेगा? उस आलोचना रहित स्थिति में, मानस काम नहीं करने का स्थिति में, जब आप

बैठे हैं, आप आनंद का अनुभव पाते हैं। तब आपको समय का जानकारी नहीं रहता है। जबकि 5 घंटे बैठते हैं 5 मिनट लगता है, लगता ही नहीं कि आप बैठे हैं। क्यों नहीं रहता है ? आनंद का अनुभूति पाने के वजह से।

अगर वही अवधूत होंगे तब कई दिनों तक या महीनों तक बैठ जाते हैं। बाल योगी तो कई साल तक बैठ जाते हैं। इसी प्रकार भीमावरम तीन दिवसीय क्लास में सुबह की 3 घंटे बैठने वाले हैं, 4 घंटे बैठने वाले हैं, 5 घंटे बैठने वाले भी हैं, अपने-अपने स्थाई के हिसाब से बैठते हैं।

जितना समय बैठते हैं मतलब उतना आनंद का अनुभूति पा रहे हैं। परम शिव ऐसे बैठ गए हैं और आनंद का अनुभूति ले रहे हैं। इसका रुचि जानने वाला उसको छोड़ नहीं सकता है।

इसलिए देखिए रमण महर्षि जैसे लोग उस स्थिति में आनंद अनुभव करते-करते, इससे पहले इतना आनंद नहीं आया तभी वह उठ नहीं पाया और कई साल तक ऐसे रह गया था। ऐसी स्थिति को "समाधि स्थिति" कहते हैं। अब लोग डर के वजह से उनको उठाकर मामूली सी स्थिति में ले आए हैं।

मतलब ब्रह्मं के साथ रहने वाले वक्त उतना आनंद पाते हैं। ऐसे ब्रह्म रस को अपना-अपना स्थाई के हिसाब से, साधना स्थाई के हिसाब से, थोड़ा सा आनंद रस को अनुभव करते हैं।

यहां पर हम सोचते हैं कि हमें 2 घंटे बैठना है या 3 घंटे बैठना है। जब आप इतना समय निर्णय करते हैं उतना ही बैठ पाते हैं, इससे ज्यादा नहीं।

क्योंकि "यद्भावं तद्भवति" करके आप जितना समय निर्णय किया है, वहां रुक जाते हैं। नहीं तो और ज्यादा आनंद पा सकते हैं। उन लोगों को सालों को मिनटों में लगे थे। उतना महान है आनंद।

दुनिया में कई प्रकार सुखों में आनंद पाने का प्रयत्न में, सुखों प्राप्त करते हैं। लेकिन उस ब्रह्मं को आश्रय करने से जितना आनंद मिलता है बता नहीं सकते हैं! का विषय नहीं जान रहे हैं।

हमारे साधकों भी अपने–अपने स्थाई पर आनंद पा रहे हैं। यहां पर बैठने का समय हिसाब नहीं है लेकिन जितना आनंद पाया है, वही मुख्य बात है।

जैसे आंजनेय स्वामी हो, या कोई भी, वह उठते ही नहीं। उस स्थिति पाना है। कोई भी ऐसे बैठे–बैठे उस आनंद को पाते हैं। ऐसे आनंद दुनिया में कहीं भी नहीं मिलेगा। परिवार में, संपत्ति में, भोगों में, और किसी में भी नहीं मिलता है, अगर मिल भी गया, तो वह तत्कालीन ही है।

इसलिए इसको गहरी नींद से तुलना करते हैं। उस स्थिति में भी ब्रह्मं के साथ रहते हैं। वहां भी मानस नहीं रहता है। वहां जागरूकता नहीं है। यहां पर है। वहां पर आनंद अप्रयत्न से मिलता है। यहां पर प्रयत्न पूर्वक मिलता है।

आनंद ही उनका स्वरूप है, तभी इतना महान ब्रह्मं को अपना साधना ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान द्वारा आश्र्य करने से उस आनंद पा रहे हैं। देखिए सुख अलग है, संतोष अलग है, सुख और संतोष शरीर और मानस संबंधित है, और तत्कालीन है। लेकिन आनंद आत्मा संबंधित है और शाश्वत है। उस आनंद पाने के लिए ही सब लोग प्रयत्न कर रहे हैं।

हम हर रोज़ परब्रह्म से रहने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। परब्रह्म और कोई नहीं है। जैसे पत्री जी ने कहा है की, आत्मा ही परब्रह्म है। आत्मा के साथ ही हम हर दिन घंटों तक बैठ रहे हैं। आंखें बंद करने से आलोचनाएं आते हैं, तब उन्हें कट कर कर ''श्वास पर ध्यास'' रखते हैं। ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान से आलोचनाओं का प्रभाव कम होती है। तब वहां आत्मा ही रहती है। तब हम उस परब्रह्म के साथ रहते रहते हम भी परब्रह्म बनते हैं।

किस लिए इतना कष्ट करते हैं ? उस स्थिति तक पहुंचाने के लिए ही! मानव लक्षणों में रहने वाले हम, अपने अवलक्षणों को निकाल कर, धीरे–धीरे देव लक्ष्मणों को बढ़ाना है। इस ध्यान का उद्देश्य वही है। एकदम बदलाव नहीं आता है। मानव एकदम देव नहीं बन जाता है। धीरे–धीरे बदलाव

आता है।

हम देखते हैं, भ्रमर – कीटक न्याय को। एक कीटक को लाकर भ्रमर अपना घोंसला में रखकर झूमकार आवाज करती है, तब उस कीटक उस आवाज को सुनते–सुनते कीटक भी भ्रमर बन जाती है। तब मानव क्यों माधव नहीं बन सकता है ?

रमण महर्षी रमन भगवान जैसे, बुद्धा बुद्ध भगवान जैसे, हनुमान जी अंजनेया स्वामी जैसे, एक फकीर रहने वाला शिरडी बाबा देव बन गए थे, तब कोई भी बन सकते हैं। 13 साल मै अपने गुरु के साथ रहा हूं, कहा था शिरडी बाबा। मतलब उस परम ब्रह्म के साथ रहा है। हम क्यों नहीं बनेंगे ? जरूर बनेंगे।

इस प्रयत्न में अनजाने में ही अपने अंदर बहुत बदलाव आते हैं। पहले मानस निश्चल होगा, तब शुद्ध होगा। धीरे–धीरे गुण बदलते हैं, बुद्धि विकसित होगा, विवेक प्राप्त होता है। और ऐसे ज्ञान भी बढ़ता रहेगा, मेधा शक्ति भी बढ़ता रहता है, अपना प्रवर्तन भी अनजाने ही बदलेगा।

ऐसे कई सारे बदलाव होकर, अंत में परब्रह्म स्थिति पहुंचते हैं। यह सहज है। 3 महीने जिसके साथ संगत रहते हैं, उन जैसे बन जाते हैं। अगर पियक्कड़ के साथ रहेंगे, तब ऐसे बन जाएंगे। एक छोटा सा कहानी बताते हैं।

एक गांव में बाप बेटे रहते थे। बेटा काम नहीं कर कर पीता रहता था और बाप डांटता था। जितना भी डांट पड़े लेकिन उनका बुद्धि बदला नहीं। बाप एक दिन चिल्ला कर कहा कि अपना बुद्धि बदलेगा या नहीं, नहीं तो मैं मर जाऊंगा । तब बेटा बोला था कि, मैं आप जो कहेंगे मैं सुनूंगा लेकिन एक शर्त पर ।

तब बाप ने पूछा क्या है ? आज से आप भी 2 महीने हर रोज मेरे साथ बैठकर पीना है। तब दो महीने बाद मैं पीना छोड़ दूंगा। तब बाप ने सहमति दिया है।

तब से दोनों पीने शुरू किए हैं। 2 महीने खत्म हो गए हैं। तब बेटा अपना वचन निभाकर पीना छोड़ दिया। तब बाप कहता है कि तुम चाहे छोड़ दो, लेकिन मुझे नहीं छोड़ना है, मैं पीता रहूंगा।

इससे समझो कि बेटा छोड़ दिया है, बाप को आदत हो गया है। मतलब जिसका साथ रहते हो, उसी को बन जाएंगे। इसी प्रकार सबसे महान ब्रह्मं के साथ रहेंगे तो, हम भी परमब्रह्म बनेंगे। उनके साथ रहने के लिए ही उनके लक्षणों को जान रहे हैं।

और इससे ज्यादा जानना या करना, कुछ भी नहीं है। हम कितना भाग्यशाली हैं की पत्री जी का मार्ग में आकर इस साधना हम सब कर पा रहे हैं। वह उतना आसान नहीं है। कितना अर्हत होना चाहिए। उस अर्हत आप लोग पाया है।

इसलिए जैसे श्री शंकराचार्य जी ने कहा है उस परम ब्रह्म के सारे लक्षणों के बारे में आगे जानते हैं।

॥ 7 ॥

''पृथक्करण की विधि से यह नहीं है, यह नहीं है, करके जो भी असत्य वस्तुओं निकालने के बाद, जो भी वेदांत शास्त्रों ने सूचना किए हैं, वही ब्रह्मं है। इतना ही नहीं, जो भी द्वैत नहीं है, निरंतर आनंद स्वरूप है, अकेला एक है, जानिए वही ब्रह्मं है''।

''अलग करने का तरीका'' उसने कहा है। मतलब किस को अलग करना है ? जो नित्य है और अनित्य हैं, उनको अलग करना चाहिए। सृष्टि में नित्यमय है, अनित्यमय भी है। मानवों को जो भी नित्य है और अनित्य है मालूम नहीं है। वह लोग अनित्य वस्तुओं को ही आश्रय करते रहते हैं। अपना जीवन को बेकार कर रहे हैं।

उसको और इसको अलग करने का ज्ञान नहीं है। इसलिए अंत में भंग हो जाते हैं। इसलिए श्री शंकराचार्य जी ने अपना साधना चतुष्टयम में नित्य और अनित्य वस्तु विवेक होना चाहिए, को कहा है। तब क्या नित्य है ? जो शाश्वत है, हर वक्त रहता है, जिसमें बदलाव नहीं होता है, युगों बदलने का बाद भी, वही नितयमय है। कौन सा अनित्यमय है ? जो भी शाश्वत नहीं है, जो भी बदलता रहता है समय-समय पर, जो हर वक्त नहीं रहता है, वही अनित्यमय है।

यह विषय ना जानकर मानव लोग अनित्यमय को नित्यमय समझकर, उनके पीछे पड़कर, और इसी के पीछे भाग दौड़ कर रहे हैं। उन्हीं को पाने के लिए प्रयत्न करते हैं, और पाने पर खुश हो जाते हैं।

इसलिए इस ब्रह्मं को और ब्रह्मं नहीं है को जानने का तरीका जानना चाहिए । उसका मार्ग भी उसने बताया है। यह नहीं है, यह नहीं है, करके असत्य वस्तुओं को, मतलब शाश्वत नहीं रहने वाले वस्तुओं को, एक-एक करके अलग-अलग कर कर जो बचता है, वही ब्रह्मं है।

एक बार सोचिए आपका शरीर शाश्वत है क्या ? मतलब नहीं है। हम जानते हैं क्यों कि हमारे बुजुर्ग लोग इस धरती पर आए हैं और चले गए

हैं। हम भी कुछ दिनों बाद चले जाते हैं।

इतना ही नहीं जब हम पैदा हुए थे कितने छोटे थे। वक्त के साथ बड़ा हो गए हैं। पहले बाल्यावस्था, बाद में युवावस्था और कौमार्य अवस्था, बुढ़ापा अवस्था और बाद में मर जाते हैं। और शरीर नहीं रहता है। मतलब इस शरीर शाश्वत नहीं है। मतलब यह शरीर ब्रह्मं नहीं है का समझ आता है।

तब शरीर के अलावा क्या है? मतलब मानस है, बुद्धि है। आप देखिए जिसमें आत्मा निकल जाता है क्या उनके मानस रहता है? मतलब नहीं है। जब तक आत्मा रहती है तभी मानस काम करती है, नहीं तो नहीं। इसलिए मानस भी ब्रह्मं नहीं है। ऐसा ही बुद्धि भी। जब आत्मा रहेगा तभी वह सोच सकता है और निर्णय ले सकता है। जब आत्मा निकल जाती है मतलब हम निकलते हैं, तब कुछ भी काम नहीं करती है। तब समझिए की बुद्धि भी ब्रह्मं नहीं है।

श्री शंकराचार्य जी का बोध किया ''निरवाण शटकम'' को जब पढ़ते हैं, अच्छी तरह समझ आता है। निर्वाण शटकम में 6 श्लोक में ही संक्षिप्त में सब समझाया है। यह मैं नहीं हूँ, यह मैं नहीं हूँ, यह मैं नहीं हूँ, वह शिव ही हूँ, उस ब्रह्मं ही मैं हूँ, करके उसमें विवरण दिया है।

इसलिए उनको अच्छी तरह पढ़कर समझ सकेंगे तो, ब्रह्मं का महत्व हमें समझ आता है। इस निर्वाण शटकम क्यों समझना है? क्योंकि उस स्थिति तक पहुंचने वाले, मैं कुछ भी नहीं हूं, किसी से कुछ संबंध नहीं है, जानने वाला ही ब्रह्मं बन जाता है।

अगर आप उस स्थिति तक पहुंच गए हैं मतलब मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं। उस निर्वाण शटकम में जो भी दिया है, अगर उनमें से कुछ भी मैं हूं करेंगे, या उस तरह जिएंगे, मतलब आप उस निर्वाण स्थिति नहीं पहुंचे हैं। ब्रह्मं को नहीं जाना है। उसमें बोध करने वाले सब असत्यमय है। उन सब को एक-एक निकालने से, सिर्फ रहेगा ब्रह्मं (आत्मा) ही है।

इसी प्रकार जो भी वेदांत शास्त्र ने बोध किया, मतलब उपनिषदों

सूचना करते हैं, बोध किए हैं, वही ब्रह्मं है ।

और क्या कहा है ''जो द्वैत नहीं है'', मतलब दो अलग-अलग नहीं है। सही कहेंगे तो इस सृष्टि में ब्रह्मं के अलावा कोई दूसरा है नहीं! हम समझते हैं की बहुत कुछ हैं, लेकिन जानना चाहिए कि कुछ नहीं है।

जब यह जानेंगे कि तब, जो नहीं होगा उनके पीछे नहीं पड़ेंगे, ना सोचेंगे और सिर्फ ब्रह्मं के बारे में सोचेंगे। निरंतर आनंद स्थिति में रहेंगे, कारण क्या है ब्रह्मं का स्वरूप ही आनंद है। नित्यानंद, अनंत आनंद, अनिर्वचनीय आनंद है। हम उस स्थिति को, ध्यान स्थिति में, प्राप्त करते हैं।

देखिए जब ध्यान करते हैं, पहले हम आंखें बंद करते हैं। तब शारीरिक स्पृह नहीं रहता है। जैसे आंखें बंद करते हैं आलोचनाएं आते हैं । वहां पर मानस सोच रहा है, मतलब मानस के साथ हैं। जब हम आलोचनाओं को कट कर कर, ''श्वास पर ध्यास'' रखते हैं, ऐसे करते-करते धीरे-धीरे आलोचनाएं बंद होते हैं। जैसे आलोचनाएं नहीं रहते हैं, वहां पर मानस भी नहीं रहता है। तब सिर्फ आत्मा रहता है, मतलब ब्रह्मं ही रहता है।

अगर आप देखेंगे तो उस स्थिति में जब आप रहते हैं, घंटों मिनटों जैसे निकल जाते हैं। अगर उस स्थिति नहीं पहुंचेंगे तब मिनटों घंटे जैसे निकलते हैं। इसलिए उस स्थिति में जब आप बैठते हैं 3 घंटे, या 4 घंटे, या 5 घंटे, 3 मिनट जैसे, या 4 मिनट जैसे, या 5 मिनट जैसे लगते हैं।

हमारे भीमावरम क्लास में बहुत लोग आते हैं। वहां पर क्रमशिक्षण के साथ ध्यान करने से, उस स्थिति तक पहुंचना, कितना भी घंटे बिठाने से बैठने जैसे नहीं लगता है, कारण क्या है ? वहां पर दूसरा कोई दृष्टि नहीं है। मानस कोई और चीजों पर नहीं जाती है। क्लास सुनेंगे, ध्यान करते हैं, खाना खाते हैं, और किसी और पर दृष्टि नहीं जाएगा।

वहां पर तीन दिन ऐसे ही गुज़र जाते हैं। बहुत लोग पूछते हैं कि वहां पर तीन दिनों में क्या सुनेंगे ? क्या करेंगे ? क्या बैठेंगे ? लेकिन जो भीमावरम आते हैं, उन्हीं को समझ आता है । नए लोगों को पहला दिन थोड़ा

दिक्कत लग सकता है, लेकिन दूसरा दिन से ठीक हो जाते हैं।

तब ऐसे रहने का क्या कारण है ? इस अनित्यमय शरीर से, या अनित्यमय मनस से भी नहीं रहेंगे। ब्रह्मं के साथ रहेंगे। आनंद रहेंगे। इसलिए बहुत लोग कई सालों से निरंतर भीमावरम आते हैं। क्यों ? उस आनंद के लिए। जीवन में ऐसे आनंद कभी नहीं पाए होंगे। इसीलिए वहां करने वाले ध्यान से इतना आनंद पाते हैं तभी बहुत लोग आ रहे हैं । इसलिए जानिए उस ब्रह्मं, आनंद स्वरूप है।

उतना ही नहीं उसने कहा है कि "अकेला एक ", मतलब वहां पर दो नहीं है, एक ही है। ब्रह्मं के अलावा कोई दूसरा वस्तु दिखा नहीं पाते हैं। जो शाश्वत है कोई दूसरा नहीं दिखपाते है। असंभव है। असलियत में अगर है तो।

इसलिए हम सब लोग बहुत भाग्यशाली हैं। उस ब्रह्मं को आश्रय कर रहे हैं। ब्रह्मं को जानने के लिए, उस ब्रह्म स्थिति में रहने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। यह सभी को संभव नहीं है। अगर हमें संभव हुआ है, मतलब हम बहुत भाग्यशाली हैं, एक तरह से पूर्व जन्म सुकृतों से ही है।

दुनिया में करोड़ों लोग हैं। लेकिन ब्रह्मं के ऊपर आसक्ति दिखाने वाले, मतलब आत्मा के ऊपर, आत्मज्ञान के ऊपर, आसक्ति दिखाने वाले बहुत ही कम होंगे। जो 350 या 360 जन्मों पार करने वाले ही आसक्ति दिखा सकते हैं, उनमें से हम हैं।

तब ऐसे ब्रह्मं के बारे में श्री शंकराचार्य जी ने हर एक विषय पर विवरण दिया है। उसने जाना है, वही हमें बोध किया है। हमें भी जानना है। उनके तरह हासिल करना है। हमें भी महान बनना है। जब ब्रह्मं के साथ रहते हैं, हम भी ब्रह्मं हो जाते हैं। ऐसे लोगों को इस लोक में देवताओं कहलाते हैं। ऐसे लोगों को मंदिर बनाते हैं, आराधना करते हैं, और बहुत कुछ करते हैं।

मतलब सृष्टि में असत्य और सत्य दोनों मिला हुआ है, वास्तव और अवास्तव मिला हुआ है, राक्षसों और देवताओं भी मिला हुए हैं। सब कुछ मिला हुआ ही यह संसार है, यह सृष्टि है।

॥ 8 ॥

''जिसको देखने से कुछ और देखने की जरूरत नहीं है, जिसको पाने से दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता है, जिसको जानने से कुछ और जानने का जरूरत नहीं है, वही ब्रह्मं है, को जानिए'' ।

देखिए इस सृष्टि में कई सारे विचित्र विषयों हैं। यूट्यूब में देखेंगे तो, समुंदर में क्या है, पर्वतों में क्या है, हिमालय में क्या है, सुंदर दृश्य देख सकते हैं। एक-एक जगह घूमकर हमें दिखाते हैं ।

इसीलिए हमारे लोग भी बहुत सारे जगह घूमने जाते हैं। ऐसे कितने सारे होंगे देखने के लिए? कितना देखना है? ऐसे कई जन्मों से देखते रहे हो और देखने को मन करता ही है।

लेकिन श्री शंकराचार्य जी ने क्या कहा है? जिसको देखने से और कुछ देखने का जरूरत नहीं है, उसी को देखना चाहिए। करण वही परब्रह्म है। उस परब्रह्मं को देखने का प्रयत्न करना चाहिए। तब दुनिया को घूमने की जरूरत नहीं है, विदेश घूमने की जरूरत नहीं है, खंडांतरों को पार कर कर घूमने की जरूरत नहीं है। समस्त उनके अंदर ही है।

उनको देखने से सब कुछ देख लिया है। इसीलिए मेरी मैडम अमेरिका बुलाने पर मना किया था। वैसे तो सब लोग अमेरिका जाने के लिए उत्साह दिखाते हैं। वहां पर क्या है करके। अगर अपने अंदर परब्रह्मं को देखेंगे, तो समस्त को देख लिए होंगे। बहुत ही श्रम करके, खर्चा करके, इतना दूर-दूर को जाकर देख रहे हैं। अपने शरीर के अंदर जाइए! सब कुछ देख सकते हैं। जब श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को अपना विश्व रूप दिखाया है, जब अर्जुन देख नहीं पाया, उसको दिव्य नेत्र दिया था। तब उनका विश्व रूप को, समस्त विश्व को, करोड़ों लोकों को, उनमें विचित्र विषयों को, उसने समस्त देखा है।

इतना महान रूप आपको देखने के बाद क्या रह गया है देखने के

लिए ? सब कुछ उसी में है । और कुछ नहीं चाहिए। आप अगर रॉकेट में जाएंगे तो कुछ ही लोक देख सकेंगे। वहीं अगर शरीर के अंदर जाएंगे तो, करोड़ों लोकों को देख सकेंगे। आप बाहर घूमने को प्रयत्न कर रहे हो, लेकिन अंदर नहीं जा रहे हो।

और उसने कहा है कि, जिसको पाने से आपको दोबारा जन्म नहीं लेने पड़ता है। कोई भी किसका प्रयत्न करना चाहिए ? जन्म रहित स्थिति को प्रयत्न करना चाहिए। तब आपको क्या पाना है, जानना चाहिए। उस परब्रह्म को पाने से आपको और कुछ पाने की जरूरत नहीं है। तभी एक रमण महर्षि, शिरडी साईं बाबा, सत्य साइ बाबा, पत्रीजी, योगियों, बाल योगियों, ऋषियों, यह सभी जान लिए हैं। उस शरीर के अंदर परम ब्रह्म को पाने के लिए प्रयत्न किए हैं, यह सभी लोग।

इसलिए बहुत सारे लोग आकर रमण महर्षि को लाखों रुपए देने के लिए तैयार थे। बहुत सुख व्यवस्था करने को कह रहे थे। लेकिन वह मना किया है माना नहीं है। उस कौपीन पहनकर ही रहा है। अगर आप चाहे तो हम सूट बूट सब लाकर रखते हैं.... तब वह कहा है कि, उन सब कुछ से मुझे क्या करना है ? जो मुझे पाना था मैंने पाया हूं, । मुझे कोई अलंकरणों, पैसे, पद, कुछ भी नहीं चाहिए। जो भी कुछ खिलाया, खाया था । जहां भी हो वहां सो गए थे। जो भी कुछ कहे थे, वह कुछ बोला नहीं था। सिर्फ एक कौपीन वस्त्र से ही उसने जिंदगी गुजारा है। उस परम ब्रह्म को पाया है, और जन्म रहित स्थिति पाया है।

शिर्डी बाबा का विग्रह रखकर करोड़ों कमाने के लिए कर रहे हैं। उन विग्रह को आराधना कर कर, आरती देकर, धुनी रखकर, कई सारे इच्छाओं मांग रहे हैं। अगर थोड़ा सा उनका आशीर्वाद रहने से करोड़ मिलेंगे तो, वह खुद यह सब क्यों नहीं रखवाया था, अनुभव नहीं किया है। क्योंकि उसने जो पाना था वह पाया है। और क्या चाहिए ? उस परब्रह्म को पाया और अनंत

आनंद में जिया है। जन्म रहित स्थिति पहुंचा है।

इसी प्रकार जिसको जानने से दूसरा कुछ जानने का जरूरत नहीं है, उसी को जानना चाहिए। मतलब आपको किसको जानना चाहिए? उस परब्रह्म को जानना चाहिए। इसके बारे में और उसके बारे में सब कुछ जान रहे हैं। किस लिए वह सबी? परब्रह्मं को जानने से और कुछ जानने का जरूरत नहीं है। सब कुछ उनके पास है।

सच में जैसे श्री शंकराचार्य जी ने कहा है, उस परब्रह्म को देखने के लिए, और पाने के लिए हम सब लोग कितने घंटे कष्ट कर रहे हैं? कितना प्रयत्न कर रहे हैं? कितने अवरोधों? समस्याओं? रुकावटें? फिर भी हम सब छोड़े नहीं है! कितना भाग्यशाली है हम लोग!

असलियत में इस परब्रह्म को आश्रय करने का "श्वास पर ध्यास" ध्यान साधना मार्ग मिलना ही पूर्व जन्म सुकृत है। नहीं तो असंभव है! सच में हम सब पत्री जी को ऋणी है!"श्वास पर ध्यास" रखने से, इतना सारे रहस्य है क्या? ऐसे लगता है! कितना आश्चर्य है! इस "श्वास पर ध्यास" ध्यान द्वारा समस्त सृष्टि रहस्य को जान सकते हैं, और जन्म रहित स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

॥ 9 ॥

''जिसको प्राप्त करने से, और लाभ पाने के लिए कुछ नहीं है, जिस सुख पाने से, और कुछ सुख नहीं है, जिस ज्ञान पाने से, और पाने को कुछ नहीं है, जानिए, वही ब्रह्मं है'', कहा है श्री शंकराचार्य जी ने।

यहां पर, अगर आपको ब्रह्मं मिल गया तो आपको और कुछ लाभ पाने का जरूरत नहीं है। आप बहुत कुछ सोचते हैं, उसको पाना है, वह भी चाहिए, कुछ कमाना है। उनके लिए पूरा जीवन कष्ट कर कर, बहुत श्रम कर कर कमाते हैं। बाद में घर बनाने चाहते हो, व्यापार करने को, अच्छा पढ़ाई करने को। जो कुछ भी प्राप्त करते हैं, जब शरीर छोड़ते हैं वह सभी यहीं छोड़ते हो।

दोबारा जन्म लेने के बाद फिर से वही चाहते हो और पूरा जीवन उनके लिए कष्ट करते हैं। उन प्रयत्नों में कुछ समस्याओं से, झगड़ों से, आर्थिक कष्टों से, गुजरते हैं और बाद में निकल जाते हैं।

फिर से जन्म लेंगे और वही करते रहेंगे। कितने सारे जन्म लेंगे ? फिर भी आप कुछ चीजों के पीछे भागते हैं। लेकिन श्री शंकराचार्य जी ने क्या कहा है ? इन सभी के पीछे पढ़ने से अच्छा, उस ब्रह्म को पाने के लिए प्रयत्न करो। अगर उस ब्रह्म ही मिलता है तो, खुद कहेंगे कि आपको और कुछ नहीं चाहिए।

360 जन्मों में प्रयत्न कर कर, और चाहते रहते हैं। लेकिन अगर उस ब्रह्मं को पाने के लिए प्रयत्न कर कर, उसको पाएंगे तो, इस सृष्टि में आपको पाने का कुछ भी नहीं रहेगा। आपको कुछ लाभ नहीं चाहिए होगा। ऐसे श्री शंकराचार्य जी ने इस संदेश द्वारा बताया है। और उसने क्या कहा है ? जो सुख पाने से आपको और सुख के पीछे नहीं पड़ेंगे उसी को पाना है।

मतलब अगर ब्रह्मं को पाते हैं उसका सुख वर्नातीत है। कितने सारे जन्मों में कितने सुख पाए हैं। फिर भी संतुष्ट नहीं है। 360 जन्मों में कई प्रकार के सुख अनुभव किया है। पुरुष जन्म लेकर पत्नी का सुख पाया है। स्त्री जन्म लेकर पति का सुख पाया है। एक जन्म में लड़के बच्चे पाकर सुख अनुभव किए हैं । एक और जन्म में लड़की बच्चों को पाकर और सुख पाया है। कितने आनंद से जिया है। बाल्यावस्था में उन बच्चों को देखकर वहां पाने वाला सुख अलग है। उन बच्चों को देखकर सम्मोहित हो जाते हैं।

अगर लड़का बच्चा हुआ तो, कितने खुश हो जाते हैं। जैसे कि पिछले जन्मों में कभी नहीं पैदा किया है। तब कितने जन्म लेने से ऐसे सुखों से संतुष्टि होंगे? मालूम नहीं! कुछ लोग न केवल बच्चों का सुख पाते हैं, पोते का भी सुख पा लेते हैं! उनके नाम लेने से ही बहुत खुश हो जाते हैं। और कितने जन्म ऐसे सुखों को चाहते हो?

ऐसे ही धन! अनंत संपन्न प्राप्त कर कर इतने जन्मों में धन का सुख भोगा है। धन के सहाय बहुत कुछ वस्तुओं को रखकर, सुख भोगा है, फिर भी संतुष्टि नहीं है। फिर से जन्म लेते हैं, कमाते हैं और सुख भोगते हैं। तब कितने जन्मों में संतुष्टि मिलेगा? अगर ऐसे और ज्यादा पाने का प्रयत्न करने में, अगले जन्म में आर्थिक दिक्कतें मिलेंगे। सबको अलग-अलग रहेगा।

सुखों को छोड़िए। वह पूरा जन्म रोते रहेंगे। किस लिए यह सब कष्टों ? इसी जन्म में ब्रह्मं को पाने का प्रयत्न कीजिए। जब उसको पायेंगे तब खुद कहेंगे कि और कुछ नहीं चाहिए। श्री शंकराचार्य जी ने कहा है ना! जिस सुख हम उस परम ब्रह्म को पाने से मिलता है, उसके बाद और कुछ सुख पाने की जरूरत नहीं होगा ना!

सोचिए किस लिए यह सभी के लिए चिंता करना है ? पूरी तरह से इसी जन्म में ब्रह्मं को पाने का कोशिश कीजिए! आप सभी बहुत भाग्यशाली हैं, तभी यह ब्रह्मं पाने का मार्ग आपको मिला है। मिलने के बाद निर्लक्ष्य नहीं करना है । अश्रद्धा नहीं करना है। अगर आप अच्छी तरह से दृष्टि रखेंगे, तब यही आखरी जन्म होगी। अगर आप दृष्टि रखेंगे अगला जन्म जरूर आखिरी होगी।

उसने और क्या कहा है ? जिस ज्ञान प्राप्त करने के बाद कुछ और ज्ञान पाने की जरूरत नहीं है, वही ब्रह्मं है । ब्रह्म संबंधित ज्ञान को ब्रह्म ज्ञान कहते हैं और उसी को आत्म ज्ञान कहलाते हैं। उस आत्मा के बारे में जितना ज्यादा जानेंगे, तब आप उतना ज्ञानी है। उसको जानने के बाद आपको कुछ और जानने की जरूरत नहीं है। प्रापंचिक ज्ञान बहुत सारे प्रकार के हैं। वह सभी असत्य ज्ञान है। सिर्फ ब्रह्म ज्ञान ही, आत्मज्ञान ही, सत्य ज्ञान है।

उस सत्य ज्ञान प्राप्त करेंगे तो आप कुछ और ज्ञान पाने की जरूरत नहीं है। उस ज्ञान मिलेगा, जब आप ब्रह्म को आश्रय करने से । ब्रह्म का मतलब आत्मा है। आत्मा को आश्रय करने से मिलता है। पत्री जी ने हमें आत्मा को आश्रय करने का मार्ग, ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान बोध किया है। और किसी ध्यान से आप आत्मा का आश्रय नहीं कर सकेंगे। सत्य को आश्रय नहीं करेंगे। सत्य ज्ञान नहीं प्राप्त करेंगे! अगर आप गाइडिंग या संगीत लगाकर ध्यान करने से, आपको कभी ज्ञान नहीं मिलने वाला है।

जब उनको पाते हैं, तब आपको और कुछ पाने का कुछ नहीं होगा, आपको भोगने का सुख और कुछ नहीं होगा, आपको पाने वाला ज्ञान भी और कुछ नहीं होगा, आपको देखने के लिए और कुछ नहीं होगा! सही में आपको और जन्म लेने का आवश्यकता नहीं होगा।

इसीलिए श्री शंकराचार्य जी का माता श्री ने उनका शादी कर कर बच्चों के साथ खुशहाली से जीने को जब कही थी .....उसने मना किया था। उस ब्रह्म स्थिति मैंने पाया है। बाकी और कुछ सब अल्पिनीय है। इससे पहले जन्मों में, मैं परिवार जीवन नहीं किया है क्या ? इससे पहले क्या मैं बच्चों को पैदा नहीं किया है ? क्या मैं धन को कमाया नहीं है ? क्या मैं सुख नहीं पाया है ? सब कुछ अनुभव किया है, माताजी। और किस लिए वह सभी ? ऐसे मृदु वाक्यों में अपने माता जी को कहा था।

उतना ही नहीं, जो ज्ञान उसने प्राप्त किया है, उसने कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक तीन बार यात्रा कर कर, सबको बोध किया है। 32 साल में ही वह निष्क्रमण किया है। कितना महान है ? कितना महान संदेश दिया है ? उतना छोटी समय में, कितने किताबें लिखा है ? तब अपना समय को क्यों बेकार करना है ? बेकार कामों में ! अपना पूरा समय घर के सफाई में लगाते हैं ! अपने मानस को ऐनक की तरह साफ रखना है ! ना कि अपने घर को !

తటవర్తి వీరరాఘవరావు గారి రచనలు

1) జీవితశాస్త్రం (మొదటి భాగం) - రూ.130/-	31) భూతదయే దైవత్వం - రూ.70/-
2) జీవితశాస్త్రం (రెండవ భాగం) - రూ.130/-	32) ఆత్మహంతకులంటే ఎవరు?- రూ.70/-
3) జీవిత సత్యాలు - రూ.130/-	33) స్త్రీ జన్మల్లో నేర్చుకునేవి, పురుష జన్మల్లో నేర్చుకునేవి - రూ.70/-
4) సత్యమార్గం - రూ.160/-	34) ధర్మ సూక్ష్మాలు - రూ.70/-
5) ధ్యాన శక్తి - రూ.130/-	35) దుఃఖ నివారణామార్గం - రూ.60/-
6) ధ్యాన శాస్త్రం - రూ.130/-	36) బ్రహ్మాజ్ఞానం - రూ.60/-
7) ఆత్మ శాస్త్రం - రూ.120/-	37) ధ్యానం (పత్రీజీ) - రూ.60/-
8) భగవద్గీతా సారం - శ్రీ కృష్ణ సందేశం -రూ.160/-	38) ధ్యానం వల్లనే జ్ఞానం - రూ.60/-
9) మరణించకముందే మరణించాలి - రూ.130/-	39) అతీంద్రియ శక్తులు - రూ.60/-
10) జీవిత సూక్ష్మాలు - రూ.130/-	40) ఆలోచించండి - రూ.60/-
11) "గైడింగ్" ధ్యానం ఎందుకు కాదు? - రూ.120/-	41) నిర్వాణ మార్గం - రూ.60/-
12) గీతాసందేశం - రూ.120/-	42) ధ్యానులకు సూచనలు - రూ.60/-
13) ఉపమాన ధ్యాన సందేశాలు -రూ.110/-	43) యోగీశ్వరుల సందేశాలు - రూ.60/-
14) భగవంతుడంటే - రూ.100/-	44) సంకల్పమంటే? - రూ.50/-
15) తెలుసుకోండి - రూ.100/-	45) ఈ జీవితం ఎందుకు? - రూ.50/-
16) మెహర్‌బాబా సందేశాలు - రూ.100/-	46) ఆశ్చర్యం... ఆశ్చర్యం - రూ.50/-
17) మరణం తర్వాత జరిగేది తెలుసుకుంటే కలిగే లాభాలు- రూ.100/-	47) ఆర్థిక పరిస్థితి పెంచుకోవాలంటే- రూ.40/-
18) పత్రీజీ చెప్పిన శ్వాస మీద ధ్యాసా? పత్రీజీ చేయించిన మ్యూజిక్ మీద ధ్యాసా? ఏది సరైన ధ్యానం? - రూ.100/-	48) ఛాంపియన్ అవ్వాలంటే? -రూ.40/-
19) కర్మ సిద్ధాంతం - రూ.80/-	49) బ్రహ్మాం అంటే? -రూ.40/-
20) ధ్యానమంటే ? - రూ.80/-	50) శంకరాచార్యుల వారి జాగ్రత పంచకం -రూ.40/-
21) త్రివిధాలు - రూ.80/-	51) శంకరాచార్యుల వారి నిర్వాణ షట్కం -రూ.40/-
22) ఉత్తమ పురుషుడు - రూ.80/-	52) మహాత్ముల సందేశాలు - రూ.40/-
23) శాస్త్రాల అర్థం- అంతరార్థం - రూ.70/-	53) సత్యం - రూ.40/-
24) ఆత్మజ్ఞానం ఎందుకు? - రూ.70/-	54) చక్రాలు - రూ.40/-
25) జ్ఞాన జ్యోతి - రూ.70/-	55) గురువును గుర్తించడం ఎలా? - రూ.40/-
26) జ్ఞాన కుసుమాలు - రూ.70/-	56) భాగవత సన్నివేశాల అంతరార్థం- రూ.40/-
27) మరణం తర్వాత కూడా వచ్చేవి - రూ.70/-	57) మౌన ధ్యానం - రూ.40/-
28) షిరిడీ సాయి సందేశాలు - రూ.70/-	58) మనం ఇహలోకవాసులమా? పరలోకవాసులమా? -రూ.20/-
29) విద్యార్థుల వికాసానికి ధ్యాన విద్య- రూ.70/-	59) శాకాహారమే మానవాహారం - రూ.15/-
30) బుద్ధుని సందేశాలు - రూ.70/-	60) అహింస మరియు శాఖాహారం- రూ.15/-

పుస్తకముల కొరకు : తటవర్తి వీర రాఘవరావు, తటవర్తివారి వీధి,
భీమవరం-1. ప॥గో॥జిల్లా. ఆం.ప్ర. సెల్: 9440309812,

Information available on Tatavarthy's website:

Website address: www.tst.org.in

a) Details of programs conducted under the guidance of Mr. and Mrs. Tatavarthy and Google Maps location are available.

b) All books by Mr. and Mrs. Tatavarthy are available in PDF format for free download in Telugu, Kannada, Hindi, and English languages.

c) All the messages of Mr. and Mrs. Tatvarthy are organized in concept-wise YouTube playlists.

d) Summaries of Mr. and Mrs. Tatavarthy's messages are provided in the form of quotations.

e) The gallery of Mr. and Mrs. Tatavarthy is also available.

For registration of a 3 day free meditation and soul-knowledge training classes held in Bhimavaram on the 1st, 2nd, and 3rd of every month, contact Sindhura, 8555995217.

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

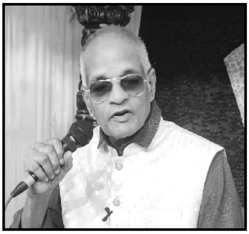

Tatavarthy Raghavarao Sir Books in English

1.	Life Science (Part-I)	Rs.120
2.	Why is Guiding Not Meditation ?	Rs.100
3.	Which is the right Meditation ?	Rs.100
4.	Die before death!	Rs.120
5.	The Law of Karma	Rs.100
6.	What is Meditation?	Rs.80
7.	True Path	Rs.80
8.	Why soul-knowledge	Rs.70
9.	What comes after death ?	Rs.70
10.	How to improve Financial Status ?	Rs.60
11.	Wisdom is attained only through Meditation	Rs.60
12.	What is Intention?	Rs.50
13.	Why is this life?	Rs.50
14.	Vegetarian Food Is Human Food	Rs.50
15.	Meditation for the Development of Students	Rs.40
16.	Non violence and vegetarianism	Rs.40

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।............ Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।............ Rs.160/-
3. भगवद् गीता का सार ।............ Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।............ Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है।............ Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?............ Rs.120/-
7. भगवान कौन है।............ Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।............ Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ – निहितार्थ ।............ Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।............ Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ?............ Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।............ Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?............ Rs.100/-
14. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।............Rs.80/-
15. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।............Rs.80/-
16. आत्म हंतक कौन होता है ।............Rs.70/-
17. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।. Rs.70/-
18. दुख निवारण का मार्ग............Rs.75/-
19. उत्तम पुरूष............Rs.60/-
20. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ?............Rs.60/-
21. निर्वाण मार्ग............Rs.60/-
22. सत्य............Rs.50/-
23. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ?......... Rs.50/-
24. गुरू को पहचानना कैसे ?............Rs.50/-
25. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या............Rs.50/-
26. शाकाहार ही मानव का आहार है!............Rs.50/-
27. ब्रह्मं क्या है ?............Rs.50/-
28. संकल्प अर्थात ?............Rs.40/-

For Books Contact : TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthyvari Street, BHIMAVARAM-534201.
CELL: 9490171853, 9440309812

श्री शंकराचार्य जी ने ब्रह्मं के बारे में, और ब्रह्मं का महत्व के बारे में, कई विषयों बताया है।

''जिसको देखने से कुछ और देखने की जरूरत नहीं है, जिसको पाने से दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता है, जिसको जानने से कुछ और जानने का जरूरत नहीं है, वही ब्रह्मं है, को जानिए''।

''जिसको प्राप्त करने से और लाभ पाने के लिए कुछ नहीं है, जिस सुख पाने से और कुछ सुख नहीं है, जिस ज्ञान पाने से और पाने को कुछ नहीं है, जानिए, वही ब्रह्मं है''

''जो सूक्ष्म नहीं है, स्थूल नहीं है, छोटी नहीं है, लंबा नहीं है, सृजन नहीं है, जो बदलता नहीं है, रूप नहीं है, गुण नहीं है, वर्ण नहीं है, नाम नहीं है, वही ब्रह्मं है, और उसी को ध्यान करो'' ऐसे रहते हैं।

''जैसे दूध में मक्खन व्यापित है, (मतलब दूध में मक्खन मिला हुआ है), इसी तरह ब्रह्मं भी सर्वव्यापित है। इसलिए समस्त वस्तुओं उस परम ब्रह्म से ही व्यापित है। उस परम ब्रह्म से ही सब काम हो रहा है''।

इतना ही नहीं, जो दवाई नहीं है, निरंतर आनंद स्वरूप है, एक अकेला है, जानिए, वही ब्रह्मं है।

Rs.40/-

– ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव